Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(6), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कृषि कार्य में संलग्न महिलाओं की सामाजिक स्थिति ।

ललिता सोनवानी*
डॉ.अमरनाथ शर्मा**
डॉ. सुचित्रा शर्मा***

सारांश –

महिलाएं किसी भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती हैं। उसे त्याग, ममता, और माया की मूर्ति कहा गया है। प्रायः जहां स्त्रियों का सम्मान होता है, वहां देवताओं का वास होता है। घरेलू कार्य के साथ- साथ ही कृषि क्षेत्र में भी महिलाओं उनकी भागीदारी निरंतर बढ़ी है, वे अपनी पारंपरिक ज्ञान, अनुभव एवं श्रम कौशल से संपन्न हैं। विशेषकर ग्रामीण कार्यबल में जहां उनकी हिस्सेदारी 70% से अधिक आंकी जाती है। यद्यपि महिलाओं की यह बढ़ती भागीदारी कृषि उत्पादन प्रणाली की रीढ़ के रूप में उभर कर सामने आई है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कृषि में संलग्न महिलाओं की स्थिति को जानना एवं उनकी समस्याओं का पता लगाना है। यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ो के संकलन और विश्लेषण पर आधारित है। कृषि क्षेत्र में संलग्न महिलाओं की स्थिति आदिवासी बहुल क्षेत्र होने से श्रम प्रधान है। कृषि क्षेत्र में अपनी पहचान के लिए वे निरंतर जूझ रही हैं, तथापि उनकी सामाजिक स्थिति अब भी संरचनात्मक असमानताओं और संस्थागत उपेक्षा से ग्रस्त है। ग्रामीण कृषि व्यवस्था में महिलाएं प्रायः अवैतनिक पारिवारिक श्रमिक, कृषि मजदूर अथवा सहायक कृषक के रूप में कार्य करती है। भूमि स्वामित्व की कमी, सीमित निर्णय-निर्माण अधिकार,कम मजदूरी तथा शिक्षा एवं तकनीक ज्ञान तक अपर्याप्त पहुंच उनकी स्थिति को और अधिक कमजोर बनाती है। इस संदर्भ में महिलाओं की भूमिका 'दृश्य श्रम'के बजाय 'अदृश्य श्रम' के रूप में अधिक परिलक्षित होती है।

कुंजी शब्द – कृषि, महिलाएं, समाजिक संरचानात्मक असमानता, संस्थागत उपेक्षा, भूमि स्वामित्व आदि।

*शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय वि.या.ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग
** शासकीय नवीन महाविद्यालय, बोरी, दुर्ग
***शासकीय वि.या.ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग

प्रस्तावना –

हमारे देश का गांव के साथ एक खास प्रकार का संबंध है, कृषि प्रधान देश होने के साथ ही प्रायः किसान को 'अन्नदाता' के रूप में मानते हैं, जब हम किसान शब्द सुनते हैं तो हमारे दिमाग में सबसे पहले पुरुष ही आते हैं, क्योंकि भारतीय कृषि व्यवस्था परम्परागत रूप से पितृसत्तात्मक रही है। भूमि का स्वामित्व प्रायः पुरुषों के नाम पर रहा है। किसान की परिभाषा को जमीन के मालिक से जोड़ा गया । किसान एक ऐसी शख्सियत है, जिसका जमीन ही सब कुछ होता है जमीन का अधिकार पुरुषों के पास रहा, इस कारण किसान की पहचान पुरुष से जुड़ गई। किसानों का अपनी मातृभूमि के साथ अटूट लगाव रहा है।

गांधी जी को किसानों से बहुत लगाव था। उन्होंने साबरमती आश्रम और वर्धा आश्रम को कृषक समाज के बीच में स्थापित किया। साथ ही स्वतंत्रता के पश्चात जब भारत के संविधान की एक कॉपी गांधी जी को

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(6), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

अनुमोदन के लिए भेंट की गई तब उन्होंने कहा कि जब तक किसानों के लिए इसमें कोई निश्चित स्थान नहीं होता,उन्हें यह संविधान स्वीकार नहीं। गांधी जी का यह निर्णय कृषकों के प्रति उनके लगाव को प्रदर्शित करता है, इसी तरह आंद्रे बेतई जी ने भी कृषक समाज की समस्याओं का अध्ययन गहनता से किया।

कृषि को सतत् विकास का एक मूलभूत साधन माना जाता रहा है, यह देश की ग्रामीण आबादी के लिए भोजन, आय और रोजगार का प्रमुख स्रोत है। यह कहा जा सकता है कि विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था मे कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत में कृषि का घरेलू उत्पाद (GDP) में योगदान लगभग 16 प्रतिशत है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में विविधता अनन्य है, स्त्री नाम पर सभी स्त्रियों को एक ही तराजू में तोलना ठीक नहीं है। जिन महिलाओं ने खेतों में बराबर सहयोग किया उन्हें "कृषि मजदूर" या परिवार की मददगार मान लिया गया जिससे हमारे समाज में महिला कृषक की अदृश्यता बनी रही।

अक्सर हम पाठ्य - पुस्तकों, फिल्मों, पोस्टरों और समाचारों में देखते है कि किसान की छवि पुरुष की होती है साथ ही अधिकतर कृषि योजनाएं पुरुष मुखिया को लक्ष्य करके बनाई जाती है। कृषि में संलग्न महिलाओं को योजनाओं में सह -लाभार्थी या अप्रत्यक्ष रूप से जोड़ा जाता है। कृषि का हमारे भारतीय अर्थव्यवस्था में इतना महत्व है कि कृषि क्षेत्र में कोई भी सकारात्मक एवं नकारात्मक परिवर्तन पूरे देश में सामाजिक - आर्थिक स्थितियों पर प्रमुख रूप से प्रभाव डालता है। बड़े-बड़े उद्योग जैसे -चाय, चीनी, जूट, कपास, कागज आदि कच्चे माल की आपूर्ति के लिए प्रत्यक्ष रूप से कृषि और संबद्ध क्षेत्रों पर निर्भर है।

उद्देश्य –

1. कृषि में संलग्न महिलाओं की स्थिति को जानना।
2. महिलाओं की समस्याओं का पता लगाना।

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक तथ्यों के संकलन एवं विश्लेषण पर आधारित है। जिसमें शोध पत्र -पत्रिकाएं पुस्तकें, सरकारी वेबसाइट इत्यादि को शामिल किया गया है।

कृषि की प्रधानता –

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार है, जिसमें भारतीय वन्यजातियों की भौतिक विशेषता कृषि की प्रधानता रही है । यदि हम मानव समाज के उद्विकास का अवलोकन करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि मानव समाज का विकास बर्बरता से हुआ है एवं प्राचीनकाल के समय मानव जीवन शिकार पर आधारित था और धीरे-धीरे विकास के क्रम में उसने कृषि को अपनाया। भारत की सम्पूर्ण वन्यजातियों मे तीन चौथाई कृषि पर अपना जीवन व्यतीत करते आ रहे हैं। इनकी कृषि की विधियां अत्यंत प्राचीन है, प्रायः भारत में कृषि की प्रधानता है, भारतीय समाज में कृषि न केवल आजीविका का प्रमुख साधन है बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का प्रमुख आधार भी है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(6), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

मनुष्य को समाजिक प्राणी होने के नाते अनेक क्रियाओं का संपादन करना पड़ता है, उनके द्वारा की गई क्रियाएं जीवन के विविध क्षेत्रों से संबंधित होती हैं, जिनमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक प्रमुख रूप से शामिल हैं, इन क्रियाओं को पूरा करने में कुछ मूल प्रवृतियों की भूमिका होती है जैसे भूख और प्यास ये मानव के लिए सबसे आवश्यक मूल प्रवृति है। मनुष्य शारीरिक श्रम के साथ -साथ मानसिक श्रम भी करता है जिसके लिए उसे ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह ऊर्जा हमें भोजन से प्राप्त होती है, जिसमें अनाज, दाले, फल-सब्जियां आदि शामिल है। ये सभी हमें कृषि के माध्यम से प्राप्त होता है जो कि कृषक की उपयोगिता को दर्शाता है।

जनजाति महिला की परिभाषा –

जनजाति महिला वह है जो किसी जनजाति समुदाय से संबंधित होती हैं जिनकी सामाजिक, आर्थिक , सांस्कृतिक तथा पारिवारिक जीवन पद्धति मुख्यतः परंपरागत जनजाति रीति- रिवाजों, विश्वासों और आजीविका के साधनों पर आधारित होती है वे सामान्यतः प्राकृतिक संसाधनों जंगल, जल,भूमि एवं वनोपज संग्रहण पर आश्रित जीवन जीती हैं।

कृषि कार्य में महिलाएं –

कृषि कार्य में महिलाएं चाय बागानों में 47 फीसदी, सब्जी उत्पादन में 39.13 फ़ीसदी एवं 60 -70 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं बीज भिगोना, बुवाई, रोपाई, कटाई, मिसाई, खरपतवार निस्तारण और वनोत्पाद संग्रहण करती हैं। परम्परागत कृषि का अधिकांश कार्य महिलाओं के द्वारा ही की जाती है। पुरुष पलायन से कृषि का नारीकरण हुआ है लेकिन निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सीमित रहती है। कुछ महिलाएं कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से मधुमक्खी पालन और जैविक खेती के बारे में प्रशिक्षण लेकर जैविक खेती भी कर रही है। साथ ही अच्छे बीजों का संग्रहण कर उसे अगले वर्ष के लिए रखती हैं।

बीज भंडारण पारंपरिक खेती की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसमें जनजातीय महिलाओं की भूमिका रही हैं। भिन्न -भिन्न भौगोलिक परिस्थितियों, सामाजिक संरचनाओं तथा सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप जनजाति महिलाओं ने बीजों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए अनेक पारंपरिक विधियां विकसित की हैं ।उदाहरण स्वरूप मक्का के बीजों को कीट एवं नमी से बचने के लिए उन्हें चूल्हे के पास लटका कर रखती हैं, जिससे धुएं का प्रभाव बीजों को सुरक्षित बनाए रखता है। जिन घरों का निर्माण मिट्टी से होता है, वहां महिलाएं मिट्टी की हांडी अथवा विशेष रूप से बनाई गई 'कोठी' में अनाजों का संग्रहण करती है, जो प्राकृतिक रूप से अनुकूल भंडारण प्रणाली मानी जाती है। बीजों की कमी या आवश्यकता के समय महिलाएं बीजों का आदान - प्रदान करती हैं, जिससे सामुदायिक सहयोग एवं आपसी निर्भरता की भावना मजबूत होती है, धन या संसाधनों की कमी की स्थिति में पड़ोस की महिलाएं एक दूसरे की सहायता कर खेतों में धान रोपाई करती हैं जो महिलाओं की सामूहिकता को दर्शाता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(6), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

समाज में महिलाओं की स्थिति –

महिलाएं किसी भी समाज की आधारशिला होती हैं, और उनकी स्थिति उस समाज की प्रगति और विकास का प्रतिबिंब होती है। जीवन के अनेक पहलू हैं–इन पहलुओं में किसी भी समाज और व्यक्ति की स्थिति अक्सर एक समान नहीं होती हैं। किसी क्षेत्र की महिलाओं की स्थिति अच्छी होती है, तो किसी क्षेत्र में सामान्य या किसी क्षेत्र में स्थिति खराब होती है। यही बात कृषि में संलग्न महिलाओं की भी है। कुछ महिलाएं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन एवं शिक्षा कर्मी के रूप में सक्रिय भूमिका निभाते हुए धीरे -धीरे समाज की मुख्य धारा से जुड़ रही है।

सामाजिक विकास का लक्ष्य केवल पुरुषों के विकास तक सीमित नहीं है बल्कि स्त्रियों के विकास पर समान रूप से निर्भर करता है। महिलाओं के विकास की उपेक्षा कर किसी भी समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। विकास की प्रक्रिया तभी सार्थक एवं संतुलित मानी जा सकती है, जब तक समाज के दोनों घटकों पुरुष और महिला को समान अवसर, संसाधन एवं निर्णय निर्माण की भूमिका प्रदान की जाए। आज लगभग 50% से अधिक जनसंख्या जनजाति क्षेत्रों की महिलाओं की है। सभी महिलाएं सजातीय श्रेणियों की नहीं है, वे विभिन्न जाति, वर्ग समुदायों से संबंधित होती हैं परिणामस्वरुप कुछ समूह अन्य की अपेक्षा अधिक कमजोर होते है। प्राचीन अर्थव्यवस्था जनजाति क्षेत्रों की जीवन धारण से संबंधित है। प्रायः देखा गया है कि उनकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि में संलग्न महिलाओं का पिछड़ापन कई आर्थिक और सामाजिक समस्याएं पैदा कर रही हैं, इनकी निम्न स्थिति, अज्ञानता, अशिक्षा, बदलते समाज से दूरी एवं आधुनिक समय में निरंतर हो रहे परिवर्तनों की जानकारी से दूरी आदि कारण इसके लिए जिम्मेदार माने जा सकते है। इनके कल्याण के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही, जो कि आने वाले समय में इनकी स्थिति बेहतर होगी। की सम्भावना को व्यक्त करती हैं।

कृषक महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियां एवं समस्याएं –

1. कृषि में संलग्न महिलाओं को रोजमर्रा के काम के साथ-साथ कई सामाजिक,आर्थिक, और स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां का सामना करना पड़ता है।

2. जाति आधारित भेदभाव और सामाजिक मानदंड महिलाओं को निर्णयों से दूर रखते है।

3. ग्रामीण समाजों में कृषि में काम करने वाली महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी मिलती है।

4. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने हेतु नई तकनीक अपनाने में असमर्थ रहती है।

5. कृषि कार्य में सक्रिय भागीदारी के बावजूद महिलाओं को भूमि स्वामित्व के अधिकार बहुत कम प्राप्त है।

6. सामाजिक पहचान अधिकांशतः "सहायक श्रमिक" तक ही सीमित कर दी जाती है जबकि वास्तविकता में वे उत्पादन की प्रक्रिया की केंद्रीय इकाई होती हैं।

7. समाज में उनकी भूमिका को प्रायः घरेलू दायित्वों से जोड़कर देखा जाता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(6), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

समस्याएं –

1. शिक्षा व अज्ञानता की कमी से महिलाओं द्वारा एकत्रित एवं उत्पादित सामग्रियों को बिचौलिया द्वारा कम कीमत देकर खरीद लिया जाता है जिससे कृषक महिलाएं ठगी का शिकार हुआ करती हैं।

2. शारीरिक एवं स्वास्थ्य समस्याएं- लंबे समय तक झुककर काम करना, भारी बोझ उठाना एवं लोहे के औजारों के उपयोग से शरीर में थकान, कमजोरी और चोट लगने की समस्याएं आती है।

3. पोषण संबंधी समस्याएं- महिलाएं स्वयं से पहले परिवार को भोजन देती है और खुद बाद में खाती कई बार आयरन युक्त आहार की कमी के कारण खून की कमी, कुपोषण, जैसी अन्य कई बीमारियों से ग्रसित हो जाती है।

4. मातृत्व स्वास्थ्य एवं प्रजनन संबधी समस्याएं- स्वच्छता और जागरूकता के कारण मासिक धर्म से जुड़ी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है साथ ही गर्भावस्था में खेत में काम करने से मां एवं शिशु दोनों के स्वास्थ्य के लिए जोखिम उठाना पड़ता हैं।

5. रसायनों से होने वाली समस्याएं- खेतों में काम के समय कीटनाशक व उर्वरक के संपर्क में आने से सांस की तकलीफ, त्वचा रोग, सिर दर्द इत्यादि सुरक्षा उपकरणों का अभाव इन जोखिमों को बढ़ाता है।

6. वेतन संबंधी समस्या- जनजातीय क्षेत्रों में महिलाओं को समान कार्य के लिए पुरुषों से कम मजदूरी दी जाती है।

7. पलायन संबंधी समस्या- वर्तमान समय में बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश के कारण कुछ महिलाएं शहरी जीवनशैली की ओर आकर्षित हो रही है, हालांकि यह पलायन कई बार इनके सामने कई चुनौतियां भी उत्पन्न करती है जैसे -असुरक्षित कार्य, झुग्गी - झोपड़िया में निवास, सांस्कृतिक तथा सामाजिक असुरक्षा समायोजन की कठिनाइयां इत्यादि।

8. वन्यजीवों से खतरा- वनों में विभिन्न प्रकार के जानवर पाए जाते है, जैसे–बंदर, भालू, हाथी आदि। जिनके खेत वनों के समीप होते हैं उन्हें वन्यजीवों से खतरा बना रहता है।

सरकार द्वारा किए गए प्रावधान-

1. यह योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का उप-घटक है। यह महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (MKSP) के नाम से जाना जाता है ,यह योजना ग्रामीण महिलाओं को कृषि उत्पादकता बढ़ाने, प्रशिक्षण और आजीविका के लिए निवेश प्रदान करती है।

2. नमो ड्रोन दीदी- यह योजना ड्रोन तकनीक से महिलाओं को सशक्त बनाने वाली महत्वपूर्ण योजना है इसमें ग्रामीण महिला जो स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं उनको ड्रोन प्रदान कर कृषि सेवाओं जैसे कीटनाशक

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(6), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

छिड़काव, फसल निगरानी,आदि की ट्रेनिंग देकर महिलाओं को सशक्त कर उद्यमी बनाने का प्रयास किया जाता है।

3. लखपति दीदी योजना- इस योजना का उद्देश्य (SHG) महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण, बाजार लिंकेज और उद्यमिता से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाना है इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी,विशेषकर कृषि आधारित आजीविकाओं जैसे - पोल्ट्री, डेयरी, हस्तशिल्प में महिलाओं की भूमिका बढ़ेगी।

निष्कर्ष –

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की एक मौलिक और सतत प्रक्रिया है जिसमें महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। घरेलू कार्य के साथ - साथ महिलाएं निरंतर कृषि कार्य क्षेत्र में लगी हुई है। साथ ही वे कृषि विकास में भी अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रही है ।इसके बावजूद उनकी सामाजिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है महिलाओं के कार्य को निचले पायदान पर धकेल दिया जाता है, जबकि उनका कार्यभार ज्यादातर बढ़ता है, उनके कार्यों का महत्व इतना कम हो जाता है कि उन्हें सामाजिक रूप से कार्य के रूप में परिभाषित भी नहीं किया जाता,जबकि उनके कार्य अर्थव्यवस्था और समाज के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण है। उनका सीमित तकनीकी ज्ञान, भूमि स्वामित्व का अभाव , अदृश्य श्रम ,सामाजिक - सांस्कृतिक रूढ़ियां आदि उनकी प्रगति में प्रमुख बाधाएं बनी हुई है। हालांकि शिक्षा, सरकारी योजनाएं, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों के माध्यम से उनकी सामाजिक चेतना और आत्मनिर्भरता में धीरे-धीरे वृद्धि दिखाई दे रही है, परंतु यह प्रगति अभी समान और संतोषजनक नहीं है। आवश्यक है कि महिलाओं को समान भागीदारी, तकनीकी प्रशिक्षण सामाजिक सम्मान एवं समान मजदूरी प्रदान की जाए ताकि उनका वास्तविक और स्थाई सुधार संभव हो सके ।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. बोस, एन.के .(2011). भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति. कोलकाता: के. पी. बागची एंड कंपनी।

2. भारत सरकार.(2011). जनगणना 2011: महिला एवं लिंग अनुपात संबंधी आंकड़े. नई दिल्ली : भारत सरकार विभाग।

3. देसाई, एन .(2012). महिला एवं विकास: भारतीय परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।

4. शर्मा, बी.आर. (2015). लैंगिंग असमानता और सामाजिक संरचना. जयपुर : रावत पब्लिकेशन।

5.गोले, उमा.(2015). जशपुर कृषि का स्थानिक वितरण प्रतिरूप. Research.J. Humanities and Social science.63 july- September. 178-184

6. सिंह, के,(2015)."कृषि में महिलाओं की भागीदारी एवं सामाजिक स्थिति." भारतीय समाजशास्त्रीय समीक्षा. 49(2), 215 - 230

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:2(6), February 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

7.. भारत सरकार.(2019). कृषि में महिलाओं की भूमिका (रिपोर्ट). नई दिल्ली : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय।

8. edupublishers.

9. Krishakjagat.org

10. www.cvru.ac.in

11. livelaw.in

12. Pib.gov.in